***11 वीं साल गिरह के मौके पर***

# झारखण्ड : एक एहसास

– ***परिमल नथवाणी***
*राज्य सभा सांसद*
*झारखण्ड*

*'मैं जिसे ओढ़ता बिछाता हूं, वह गजल आपको सुनाता हूं'* ऐसा किसी शायर ने कहा है। मेरे जहन में झारखण्ड की यह अहमियत है। गो जाहिरा तौर पर झारखण्ड से मेरा रिश्ता 2008 से शुरू हुआ, मुझे लगता है कि यह रिश्ता काफी पुराना है। वैसे तो पूरे हिन्दुस्तान के किसी भी जर्रे पर पैर रखने पर एक खास अपनापन महसूस होता ही है; लेकिन झारखण्ड की बात कुछ निराली है। 'झारखण्ड' शब्द की ध्वनि में वह जादू है जिससे कानों को 'मेटलिक' और 'मेलोडियस' दोनों ध्वनियों का एहसास एक साथ होता है; और उसकी गुंज भीतर की गहराइयों तक पहुंचती है।

'झारखण्ड' का एक अर्थ है – जंगल झाड़वाला इलाका। संस्कृत में एक श्लोक है जिसका एक अर्थ यह भी है 'झारखण्ड में रहनेवाले धातु के बरतन में दूध पीते हैं, साल पेड़ के पत्तों में भोजन करते हैं और खजूर के पेड़ के पत्तों से बनी चटाई पर सोते हैं (*अयस्कः पात्रे पयःपानम्, साल पत्रे च भोजनम्, शयनम् खर्जूरी पात्रे, झारखण्डे विधिवते*)।' वर्तमान झारखण्ड प्रदेश से इस श्लोक का कोई सम्बंध है या नहीं यह तय करना विद्वानों का काम है। लेकिन इस बात से तो इनकार नहीं हो सकता कि पूरे भारत के जंगलो के अनुपात में झारखण्ड एक अगुवा राज्य है और वन्य–जीवों के संरक्षण के लिए मशहूर है। यहां की जमीन के तले धातुओं–अयस्कों के भण्डार भरे पड़े हैं। इतना ही नहीं, झारखण्ड भारत की 90 प्रतिशत जनजातियों का निवास–स्थान है। वह आदिवासियों की गृह–भूमि है।

झारखण्ड के जिस निरालेपन का जिक्र मैंने किया वह मैं यहां कदम कदम पर महसूस कर रहा हूं। वर्ष 2008 में मेरे चुनावी दौरों के बीच मैं कुछ मंदिरों में गया। यहां पर हनुमानजी की मूर्तियों में मुझे सदा यह एहसास हुआ कि हो सकता है राम चरित मानस में तुलसीदासजी ने जो लिखा है कि *'आगे चले बहुरि रघुराया, ऋष्यमूक परबत नियराया'* की ऋष्यमूक पहाड़ी झारखण्ड में ही यहीं कहीं हो। देश के अन्य हिस्सों में भी मैंने हनुमानजी की महाकाय सिंदूरी मूर्तियों देखी हैं लेकिन झारखण्ड के मंदिरों में हनुमानजी की मूर्तियां देखकर यही लगता है कि हनुमानजी, सुग्रीव, बालि, जाम्बवन्त आदि मूलतः झारखण्डसे ही होने चाहिए। यहां के लोगों की, खासकर के ट्राइबल लोगों की चुस्ती–फुर्ती, कठोर परिश्रम, कौशल, और बुद्धि–चातुर्य

देखकर इस प्रदेश को रामायण के युग से मैं बरबस जोड़ देता हूं। झारखण्ड के आदिवासी इलाकों और जंगलों में जा कर मेरा यह एहसास यकीन में बदल जाता है।

'अकबरनामा' में जिक्र है कि छोटा नागपुर सहित उससे जुड़े दूसरे ट्राइबल इलाकों को झारखण्ड कहा जाता है। मुगल काल में झारखण्ड क्षेत्र 'कुकरा' नामसे भी जाना जाता था। चन्द्रगुप्त दूसरे के शासन काल के दौरान चीनी यात्री फाह्यान 399 ई. में बौद्ध ग्रन्थों की खोज में भारत आया था। उसने छोटानागपुर क्षेत्र को 'कुक्कुटलाड' कहा। एक अन्य चीनी यात्री युआन च्यांग (630-644 ई.), ईरानी यात्री अब्दुल लतीफ (1600 ई.), ईरानी धर्माचार्य मुल्ला बहबहानी (19 वीं सदी) और बिशप हीबर (1824 ई.) आदि के यात्रा-वृत्तांतों में छोटा नागपुर और राजमहल का जिक्र है। मध्यकाल के इतिहास में चर्चा हे कि 'खोखरा' देश में (यानी कि 'कुकरा' अर्थात् झारखण्ड?) में सोना और हीरे पाये जाते थे। तात्पर्य यह है कि झारखण्ड की जमीन में खनिजों के भण्डार की बहुतायत ऐतिहासिक है।

झारखण्ड मानव-सभ्यता और संस्कृति के विकास की 'जंगल-गाथा' का सशक्त प्रमाण है। आम तौर पर सभ्यता का उद्भव व विकास नदी-घाटी और तटवर्ती मैदानी इलाकों में पाया गया है; जिसे मानव सभ्यता की 'जल-गाथा' कहा गया है। लेकिन झारखण्ड ही वह प्रदेश है जहां सदियों से जंगलों ने ही सभ्यता और संस्कृति की राह जनजीवन को दिखाईं। पुरातात्विक और मानव-सभ्यता में रूचि रखनेवालों के लिए झारखण्ड एक जीती जागती पाठशाला है। झारखण्ड के विभिन्न हिस्सों में पुरातात्विक उत्खनन-अन्वेषण हुआ है। यहां पूर्व, मध्य और उत्तर पाषाणकालीन युग के औजार व उपकरण मिले हैं जो इस बात का प्रमाण है कि झारखण्ड में आदि मानव रहता था जो मानव भी था, महा मानव भी।

पृथ्वी की कर्क रेखा झारखण्ड के ठीक बीचों बीच गुजरती है। उष्ण कटिबंधीय प्रदेश होने के बावजूद झारखण्ड की आबोहवा में एक विशेष नमी है, ठंडक है जो एक अनोखा एहसास कराती है।

मुझे फख्र है कि इस प्रदेश ने राज्य सभा में मुझे भेजा है। प्रदेश के हित में बतौर सांसद मैं पूरी लगन से जुटा हूं - अपनी शक्ति और मर्यादाओं के साथ। मेरे इस काम में मैं कितना सफल और असफल हूं इसका फैसला मैं झारखण्ड के लोगों पर छोड़ता हूं। लेकिन मेरे जजबात, मेरी भावनाएं झारखण्ड से बहुत गहरे जुडी हैं, यह निर्विवाद है। स्वतंत्र्य भारतीय संघ के 28 वें राज्य के रूप में झारखण्ड राज्य की 11 वीं वर्षगांठ पर प्रदेश की जनता को मेरी शुभकामना।

★ ★ ★